इन्टरव्यू २१

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम अनवर जमाल है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 25 साल है।

प्र: करघा जिस पर आप बुन रहे हैं, आप का अपना है ?
ज: हां अपना करघा है।

प्र: और भी आपके करघे हैं ?
ज: नहीं खाली यही एक है।

प्र: इस पर आप महीने में कितनी साड़ियां बुन लेते हैं ?
ज: चार साड़ी।

प्र: एक साड़ी पर कितना आपको मिलता है ?
ज: हम तो मजदूरी करते हैं, एक हजार मिलता है, एक साड़ी का।

प्र: लेकिन ये करघा तो आपका है ?
ज: हां, लेकिन इसका तानी और बाना है जो दूसरा कोई देता है।

प्र: यानि आप करघे पर दूसरों का सामान लाकर बुनते हैं ?
ज: हां।

प्र: तो ये हजार आपका बंधा हुआ है ?
ज: हां।

प्र: अगर आप किसी महीने ज्यादा काम वाली साड़ी बिने तो उसका भी उतना ही होगा ?
ज: जैसे जब हम बिनेंगे, तो इसका एक हजार मिलेगा। चाहे तीन ठे पूजे चाहे एक ठे पूजे। एक साड़ी का हजार मिलेगा।

प्र: यानि चार साड़ी का चार हजार मिलेगा ?
ज: हां।
अन्य- नहीं चार हजार कहां मिलता है। मतलब कि अगर चार साड़ी बीने कोई तो चार हजार मिलेगा। दो ठो से ज्यादा नहीं मिलती है। अन्तर- जितना मेहनता करेंगे उतना निकलेगा।

अन्य- अगर दिन में हम 14 घण्टे मजूरी करेंगे तब चार साड़ी होगा। अब आप ही बताई।

प्र: तो आपको महीने में कितने का आर्डर मिल जाता है ?
ज: अब देखिये लाइन-वाइन (बिजली) रहती नही है, अब देखिये से बस तीन घण्टा चलेगा, इसके बाद अंधेरा ही रहेगा।

प्र: नहीं, मतलब साड़ी, आपको एक महीने में कितनी साड़ी मिल जाती है, लगभग ?
ज: लगभग
अन्य- दो, तीन

प्र: उन्हीं को बताने दिजिए ?
ज: तीन

प्र: तो तीन हजार आपका हो जाता है महीने में ?
ज: हां कोई वख्त हो भी जाता है, कोई वख्त नहीं भी होता है।

प्र: आप एकदम खुलकर बताइये, ऐसा नहीं हैं कि ये टेप रिकार्डर कहीं ले जाकर दे देंगे ?
ज: नही, इसमें काई जरूरी नहीं कि तीनै ठे, दो ठे कभी एक ठे होता है।

प्र: कभी नहीं भी होता है ?
ज: अब ऐ वख्त देखिये खाली यही एक ठे है। यही लिए कोई जरूरी नहीं रहता कि तीन ठे बिनेंगे।

प्र: आपके घर में कौन-कौन है कितने लोगों का परिवार है, जिनका खर्चा आपको उठाना पड़ता है ?
ज: छः आदमी हैं।

प्र: बच्चे हैं कि भाई वगैरह ?
ज: भाई हैं मां बाप हैं।

प्र: तो सबका खर्च इतने में चल जाता है ?
ज: बस चल जाता है।

प्र: भाई लोग क्या करते हैं ?
ज: भाई लोग अपना अलग साड़ी रंगते हैं।

प्र: अच्छा तो अलग है ?
ज: हां।

प्र: आपके पिता जी क्या करते हैं ?
ज: कुछ नहीं।

प्र: पहले तो बुनकारी ही करते थे ?
ज: हां, अब छोड़ दिए।

प्र: पिता जी मजदूरी करते थे या अपने करघे पर बुनते थे ?
ज: ऐसे ही लाकर करते रहे। जैसे ये घर हमारा ही है। ये करघा अब्बा का ही है, अब तो नहीं करते तो हम करते हैं।

प्र: तो आपके पास अब्बा के जमाने से सही एक करघा था ?
ज: हां।

प्र: एक भी बढ़ा नहीं है ?
ज: नहीं एक भी बढ़ा नहीं हैं।

प्र: आप तो बढ़ाना चाहते होंगे ?
ज: हो ही नही पा रहा, इतनी कमाई ही नहीं है।

प्र: जब से आपके अब्बा बुनकारी का काम पर रहे हैं तब से बुनकारी की स्थिति ऐसी है या अभी कुछ ऐसी हुई हैं ?
ज: (अन्य) ये वो नहीं बता पायेंगे, हम लोग बतायेंगे।
ये हम नहीं बता पायेंगे हमें जानकारी नहीं। हम तो मजदूरी कर रहे हैं।

प्र: नहीं आप ये तो बता सकते हैं, आपके अब्बा के जमाने में आपके घर की स्थिति कैसी थी, अब कैसी है? ये तो आपको अन्दाजा होगा ही ना ?
ज: पहले से बेकार तो हो ही गया, अब तो हर एक चीज में मंहगाई बढ़ गई, उसमें हिसाब तो पहले से बेकार ही है।